❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मा बिभेर्न मरिष्यसि।।

– अथर्व. 5/30/8

हे आत्मन्! डर मत, तू मरेगा नहीं।

O soul! be not araid ! you will not die.

वर्ष 42, अंक 36 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 29 जुलाई, 2019 से रविवार 4 अगस्त, 2019
विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

ऋषि जन्मभूमि टंकारा में गुजरात के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी की गरिमामयी उपस्थिति

आर्यों का सबसे बड़ा तीर्थ स्थल–महर्षि की जन्मभूमि – आचार्य देवव्रत

गुजरात सभा एवं श्रीमद् दयानन्द स्मारक ट्रस्ट, टंकारा की ओर से महामहिम राज्यपाल का भावपूर्ण अभिनंदन

आर्य समाज की महान विभूति डॉ. आचार्य देवव्रत जी गुजरात के नए राज्यपाल बनने पर 27 जुलाई, 2019 को महर्षि दयानंद की जन्मभूमि टंकारा में पहुंचे और उन्होंने स्मारक के प्रांगण में जाकर महर्षि के उपकारों को याद किया। ऋषि दयानंद स्मारक ट्रस्ट की ओर से आचार्य जी का भावपूर्ण स्वागत, अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर ट्रस्ट एवं आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात की ओर से विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया और आचार्य जी ने स्वयं अपने करकमलों से यज्ञ में आहुतियां प्रदान की। यज्ञशाला में गुरुकुल उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी, आचार्य गण, ट्रस्ट के ट्रस्टी तथा आर्य समाजों के अधिकारीगण भी उपस्थित थे। आज ऋषि स्मारक के प्रांगण में चारों ओर उमंग, उत्साह और उल्लास का वातावरण था। क्योंकि महर्षि दयानंद के अनन्य भक्त तथा अपने आपमें अनुपम सिद्ध हुआ।

आर्यों का सबसे बड़ा तीर्थ स्थल – महर्षि की जन्मभूमि

इस अवसर पर आचार्य जी ने अपना विशेष उद्बोधन देते हुए उपस्थित आर्यजनों

ऋषि जन्मभूमि टंकारा में स्थित यज्ञशाला में धर्मपत्नी के साथ यज्ञ करते हुए महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी, सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य, डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार एवं अन्य अतिथि महानुभावों सहित गुरुकुल के विद्यार्थी।

पर आकर आज मैं एक प्रकार से यह भूमि हमारे गुरु ऋषि दयानंद की जन्मभूमि है। यही आर्यों का सबसे बड़ा तीर्थस्थल है, इससे बड़ा तीर्थ कोई हो नहीं सकता। महर्षि दयानंद की जन्मभूमि पर आकर आज मैं एक प्रकार से जन्म ही नहीं अपितु यहीं के एक शिवालय में उन्हें बोध भी हुआ। बोध प्राप्त करके ऋषि दयानंद अपने घर को, माता-पिता और उसे सारे रिश्ते-नातों को छोड़कर अकेले निकल पड़े। ऋषि दयानंद का यह त्याग, बलिदान, समर्पण प्राणीमात्र के कल्याण के लिए था। वेद धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए तथा आर्यसमाज की स्थापना के लिए ही उन्होंने अपना सर्वस्व त्याग दिया। आर्य समाज और ऋषि दयानंद के विचार मेरे जीवन में न आते तो आज मैं इस रूप में आपके बीच में न होता। ये सब ऋषि दयानंद की विचाराधारा और आर्य समाज की देन है।

गुजरात में सेवा करना मेरा-सौभाग्य

आचार्य देवव्रत जी ने ऋषि दयानंद के त्याग, तपस्या और उपकारों का स्मरण करते हुए अपने उद्बोधन में आगे कहा कि आज मैं इतने विशाल और महान राज्य

गुजरात के राज्यपाल को सम्मानित करते सार्वदेशिक सभा एवं गुजरात सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी एवं गुजरात सभा सभा के मन्त्री श्री हंसमुख भाई परमार जी। उद्बोधन देते आचार्य देवव्रत जी एवं टंकारा ट्रस्ट के मन्त्री श्री अजय सहगल, जी उपदेशक महाविद्यालय के आचार्य रामदेव जी आचार्य देवव्रत जी को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए।

आर्य समाज की उन्नति, प्रगति और सफलता के लिए नित-निरंतर प्रयत्नशील रहने वाले आचार्य देवव्रत जी का पर्दापण और गुरुकुल के विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि टंकारा की इस पवित्र धरती पर आज मैं दूसरी बार आया हूं। किंकर्त्तव्य विमूढ़-सा हो रहा हूं और सोच रहा हूं कि क्या मैं उसी पवित्र धरा पर हूं जहां ऋषि दयानंद का जन्म हुआ और के लोगों के बीच में काम करने का अवसर पाकर गौरवान्वित हूं। इसी धरती पर

– *शेष पृष्ठ 8 पर*

आर्यसमाज की ओर से असम में बाढ़ पीड़ितों के लिए बचाव एवं राहत कार्य

आर्य समाज ने पानीखेती में बांटी बाढ़ राहत सामग्री

गुवाहाटी, 26 जुलाई (पू.सं)। असम आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज गुवाहाटी के सौजन्य से एवं रोबिन हुड आर्मी के स्वयं सेवकों की सहायता से पानीखेती में बाढ़ पीड़ितों में खाद्य सामग्री, पीने का पानी व पहनने वाले कपड़ों का वितरण हुआ। आर्य समाज के प्रधान प्रदीप आर्य एवं असम आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री लोकेश आर्य की देख रेख में सहायता सामग्री का ट्रक पानीखेती के लिए रवाना हुआ।

असम आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान रामाकांत सिंघल के अनुसार बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए दूसरा जत्था आगामी 28 जुलाई को मोरीगांव जाएगा।

जनता द्वारा प्रदत्त खाद्य सामग्री नगर में दो केंद्रों आर्य समाज मंदिर गुवाहाटी तथा नेहरू स्टेडियम में एकत्रित किया जा रहा है। इस संबंध में संतोष आर्य से 8011509092 नंबर पर संपर्क किया जा सकता है। यह जानकारी एक प्रेस विज्ञप्ति के जरिए दी गई है।

वेद-स्वाध्याय

पूर्ण परमात्मा

पूर्णात् पूर्णमुदचति पूर्णं पूर्णेन सिच्यते।
उतो तदद्य विद्याम यतस्तत् परिषिच्यते।। - *अथर्व० 10/8/29*
ऋषिः कुत्सः।। देवता - आत्मा।। छन्दः अनुष्टुप्।।

शब्दार्थ - पूर्णात् = पूर्ण से **पूर्णम्** = पूर्ण **उदचति** = उत्पन्न होता है और **पूर्णम्** = यह पूर्ण **पूर्णेन** = उस पूर्ण द्वारा **सिच्यते** = सींचा भी जाता है। **उतो** = तो **अद्य** = अब, आज हम **तत्** = उस [पूर्ण] को **विद्याम** = जानें, प्राप्त करें **यतः** = जिस द्वारा **तत्** = वह [दूसरा पूर्ण] **परिसिच्यते** = पूर्णतया सींचा जा रहा है।

विनय - मनुष्यो ! आओ, हम यह जानें कि यह संसार परिपूर्ण है। संसार की पृथक्-पृथक् वस्तुएँ बेशक अपूर्ण हैं, अधूरी हैं, त्रुटिमय हैं, किन्तु यह समूचा संसार मिलकर परिपूर्ण ही है। यदि हम संसार की परिपूर्णता को अनुभव नहीं करते हैं तो हम अभी संसार को नहीं जानते हैं। पूरी-समूची दृष्टि से जब हम संसार को देख सकेंगे तो हम देखेंगे कि इस समष्टि संसार में कोई कसर, त्रुटि व कमी नहीं है और यह संसार पूर्ण क्यों न हो, जब यह पूर्ण पुरुष का रचा हुआ, पूर्ण से पूर्ण ही उत्पन्न होता है। निःसन्देह यह पूर्ण जगत् उस पूर्ण परमेश्वर से निकला है, प्रादुर्भूत हुआ है।

भाइयो ! और फिर तुम यह देखो कि उस पूर्ण प्रभु ने इस पूर्ण जगत् को एक बार पैदा करके ही नहीं रख दिया है, किन्तु वह इसे लगातार सींच भी रहा है, सतत जीवन-रस पहुँचाता हुआ पालन भी कर रहा है, अर्थात् यह जगत् न केवल पूर्ण पैदा हुआ है, किन्तु पूर्ण रूप से चल भी रहा है और पूर्ण रूप से सदा चलता रहता है, इस पूर्ण माली द्वारा पूरी तरह सींचा जाता हुआ सदा पूर्णतया फूलता-फलता रहता है।

हे मेरे भाइयो ! यदि हमने यह जान लिया है कि यह जगत् एक परिपूर्ण कृति है और फिर यह भी जान लिया है कि फलतः इसका कर्त्ता भी परिपूर्ण होना चाहिए, तो आओ अब हम उस परिपूर्ण को जानें-पहचानें और प्राप्त करें जो पूर्ण इस पूर्ण जगत् को उत्पन्न कर इसे सदा परिपूर्णतया सींच रहा है। आओ, आओ! आज से हम उसकी खोज में निकल पड़ें जो परिपूर्ण है और परिपूर्णता का देनेवाला है। आज से उस पथ के पथिक बन जाएँ जोकि हमें परिपूर्णता के पद पर पहुँचाने वाला है।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

राजनीति का जातिवादी चश्मा

..... हमने सिर्फ इतना पढ़ा सुना था कि असम के छोटे से गाँव की गरीब किसान की बेटी हिमा दास ने बीस दिन के अन्दर पांच गोल्ड मेडल जीतकर देश का नाम गर्व से ऊंचा कर दिया। हमने कई बार उनका वह वीडियो देखा जब वह प्रतियोगिता जीतने के बाद रुककर, साँस लेने की बजाय भारतीय दर्शकों से हाथ से इशारा कर भारतीय गौरव का प्रतीक तिरंगा मांग रही थी, ताकि वह उसे लहराकर इस देश की शान को और बढ़ा सके। पर वह राष्ट्रीय खुशी ज्यादा देर न टिक सकी बेशक उसके हाथों में तिरंगा था किन्तु सोशल मीडिया पर बैठे लोगों ने फटाफट गूगल पर उसकी जाति टटोलनी शुरू की.....

कुछ दिन पहले की ही बात है जब गूगल पर बेडमिन्टन खिलाडी पीवी सिंधु के पदक जीतने बाद इंटरनेट पर उनकी जाति खूब टटोली गयी थी। उस समय इसकी निंदा हुई थी लेकिन एक बार फिर इंटरनेट पर देश की युवा धावक हिमा दास के एक महीने के भीतर ही पांच स्वर्ण पदक जीतने के बाद उनकी जाति भी खोजी जा रही है। देखकर लगता है आज जिन सबसे बड़ी बीमारी से भारतीय जूझ रहे हैं वे मधुमेह या कैंसर नहीं बल्कि जातीय पहचान, गर्व और शर्मिंदगी की बीमारी है जिसके निदान की कोई दवा, कोई टीका, अभी कोसों दूर-दूर तक दिखाई नहीं दे रहा है। यह तय है आने वाले समय में यह बीमारी कम होने के बजाय और ज्यादा समाज में दिखाई देगी।

हिमा दास को लेकर हमने सिर्फ इतना पढ़ा सुना था कि असम के छोटे से गाँव की गरीब किसान की बेटी हिमा दास ने बीस दिन के अन्दर पांच गोल्ड मेडल जीतकर देश का नाम गर्व से ऊंचा कर दिया। हमने कई बार उनका वह वीडियो देखा जब वह प्रतियोगिता जीतने के बाद रुककर, साँस लेने की बजाय भारतीय दर्शकों से हाथ से इशारा कर भारतीय गौरव का प्रतीक तिरंगा मांग रही थी, ताकि वह उसे लहराकर इस देश की शान को और बढ़ा सके। पर वह राष्ट्रीय खुशी ज्यादा देर न टिक सकी बेशक उसके हाथों में तिरंगा था किन्तु सोशल मीडिया पर बैठे लोगों ने फटाफट गूगल पर उसकी जाति टटोलनी शुरू की ताकि वह पोस्ट डालकर अपने जातीय गर्व को चार चाँद लगा सके। उसके ग्रुप उसकी फ्रैंडलिस्ट के लोग भी जान सके कि यह महारथी कितने कमाल का है कितनी जल्दी उसकी जाति खोद लाया।

इसके बाद खेल शुरू हो गया। सोशल मीडिया पर कुछ पोस्ट घूमने लगी, जिनमें कहा जा रहा था कि दलित होने की वजह से हिमा दास को सरकार ने उचित इनाम व सम्मान नहीं दिया। इसमें केवल आम लोग शामिल नहीं थे बल्कि जाने-माने हाल ही में भाजपा से कांग्रेस में गये नेता उदित राज भी शामिल थे जिन्होंने अपने ट्वीट में लिखा, कि "हिमा दास के सरनेम में दास की जगह मिश्रा, तिवारी, शर्मा ये सब लगा होता तो सरकारें करोड़ों रुपए दे देती और मीडिया पूरे दिन देश के सभी चैनलों में चलाते।"

हालाँकि हिमा को लेकर यह नया तमाशा नहीं है। इससे पहले भी जब उसने विश्व अंडर-20 एथलेटिक्स चौंपियनशिप की 400 मीटर दौड़ स्पर्धा में पहला स्थान प्राप्त कर गोल्ड जीता था तब भी सोशल मीडिया पर इसी तरह का जातीय प्रचार किया गया था। उनकी जाति से सम्बन्धित अनेकों पोस्ट की गयी थीं। एक पोस्ट में तो उनके साथ भारत की पूर्व एथलीट पीटी उषा खड़ी थी और पोस्ट में लिखा था कि "मूलनिवासी ही कोच है। मूलनिवासी ही धावक है। आप समझ जाइए सफलता इनकी ईमानदारी की वजह से मिली है। अन्यथा मनुवादी तो हर जगह चोर ठगी करते हैं।"

इन पोस्टों से हमें अहसास हुआ कि जिसके पास जैसा चश्मा है, वह वैसा भारत देख रहा है और जिसके पास जिस रंग की स्याही है, वह वैसा ही भारत लिख रहा है। क्योंकि इन दिनों देश एक मूलनिवासी नाम की नई बीमारी से भी पीड़ित दिखाई दे रहा है। इस मूलनिवासी शब्द के नाम पर पुराने षड्यंत्र को नए रूप में उठाने का प्रयास जारी है। इसमें थ्योरी है, कई सिद्धांत हैं। एक ओर जातीय गर्व है, दूसरी ओर जातीय अपशब्द है। एक तरफ जातीय का अहंकार है, दूसरी तरफ शर्मिंदगी है। लोगों की रगों में यह सब इस कदर भरा हुआ है कि पूरा रक्त निचोड़ लो तो भी एक बूंद बच ही जायेगा। यही वह एक दो बूंद हैं जिसने कभी भारतीय समाज को एकजुट होकर विदेशी आक्रांताओं से मुकाबला भी नहीं करने दिया।

आज सभी भारतीयों के सामने यह प्रश्न जरुर मुंह खोले खड़ा है कि आखिर शिक्षित और आधुनिक होते समाज में जाति लोगों का पीछा नहीं छोड़ रही या लोग ही इसका पीछा नहीं छोड़ना चाह रहे हैं। जहाँ तक हमने समाज का विश्लेषण किया तो सामाजिक स्तर पर जाति परेशानी का विषय पाया किन्तु राजनीतिक स्तर पर यह भुनाने का विषय पाया। साफ देखा जाये तो जाति भारतीय समाज जातियों में विभाजित है। हर समाज के व्यक्ति को उसका हिस्सा होने पर गर्व है। वह या उसके समाज का कोई और व्यक्ति ख्याति या बड़ी उपलब्धि हासिल करता है तो उसे इस बात का बड़ा गर्व होता है कि उसके समाज के आदमी ने अपने लोगों का नाम रोशन किया।

इस व्यवस्था को हमारे समाज में पलने-बढ़ने वाला हर बच्चा अपनी उम्र के साथ ही समझने भी लगता है। जब वह स्कूल जाता है तो उसकी समझदारी और बढ़ जाती है। कदम-कदम पर वह अहसास करने लगता कि इस सीढ़ीदार ढांचे में वह किस नंबर की सीढ़ी पर खड़ा है। इतिहास उठाकर देखिए जब भारत में अंग्रेजों ने घुसना शुरू किया था तो कैसे हमने धीरे-धीरे अपनी सत्ता उन्हें सौंप दी। इसके उलट जब चीन में अंग्रेजों ने घुसना शुरू किया तो भले ही चीन की सेना हार गई लेकिन वहां गांव के गांव लोग अंग्रेजी फौज से छापामार युद्ध करने लगे। लेकिन किसे कहें इस हमाम में सभी नंगे हैं। क्या हमारे पास मुद्दे नहीं हैं, सिर्फ जातियां है। हमारी जाति का बुरा आदमी भी हमें प्यारा है और दूसरी जाति का अच्छा आदमी भी हमें पसंद नहीं है। क्या यह कबीलाई मानसिकता है। इससे छुटकारा कैसे पाया जा सकता है और क्या इस कबीलाई मानसकिता से राष्ट्र का निर्माण हो सकता है? - ***सम्पादक***

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली
दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

हिन्दू संस्कृति पर चोट करता हथौड़ा बन गया बॉलीवुड

नेटफ्लिक्स की नई वेब सीरीज लैला रिलीज हो चुकी है और धीरे-धीरे करके दर्शकों की जिंदगी में अपनी जगह बना रही है। इस वेब सीरीज में सनातन धर्म को जिस तरीके से दिखाया गया उसे देखकर आपको अपने धर्म से घिन आने लगेगी। दरअसल यह कोई अलग कहानी नहीं है बल्कि पिछली कहानियों का ही बदला हुआ रूप है। दुनिया जानती है कि सिनेमा में एक विश्वास दिलाने की अनूठी कला है। मनोविज्ञान का सिद्धांत नहीं यही कहता है कि किसी दृश्य को बार-बार देखने पर उसके प्रति विश्वास पैदा हो जाता है। जो कुछ परदे पर दिखाया जाता है वह दर्शकों को प्रभावित कर यह कोशिश करता है कि जो दिखाया जा रहा है, उस पर विश्वास जरुर किया जाए। हिंदी सिने जगत जिसे बालीवुड भी कहा जाता पिछले कई दशकों से चलता रहा है। गृहस्थी में फंसे दांपत्य जीवन से लेकर अधिकांश फिल्मों का विषय प्रेम पर टिका रहा है। फिल्में देशप्रेम से लेकर हिंसा और अपराध पर भी बनी, गरीब-किसान मजदूरों के शोषण पर भी। विधवा विवाह को लेकर कुप्रथा पर चोट करती प्रेमरोग जैसी फिल्मों ने समाज को जगाया तो साल 1952 में बैजू बावरा जैसी फिल्मों में गुरु शिष्य के सम्बन्ध, संगीत की महिमा का गुणगान भी किया गया।

किन्तु इन सबके बीच बॉलीवुड का एक एजेंडा हमेशा से चलता रहा जो हिंदुत्व विरोधी लॉबी से कण्ट्रोल होता है। बॉलीवुड में जब भी कोई सामाजिक मुद्दों की फिल्मे बनती हैं अक्सर सनातन संस्कृति पर चोट की जाती है, जानबूझ कर त्योहारों और रीतियों को असामाजिक और विषैला बना के दिखाया जाता है। इसके विपरीत बड़े सॉफ्ट तरीके से इस्लाम की एक बेहतरीन छवि के तौर पर भारतीय दर्शकों के सामने रखते गये। यानि सिनेमा

.....हिन्दू धर्म को कितनी भी गाली दो, उसका कितना भी अपमान करो, उसके इतिहास के साथ कितनी भी छेड़छाड़ करो, धर्म से जुड़े लोगों का कितना भी अपमान करो वे सब इस देश में कभी बैन नहीं होगा। यह एकतरफा हिन्दू विरोध संयोग नहीं बल्कि सोची समझी साजिश है। लव जिहाद, धर्म परिवर्तन करने, अपमान करने, भावनाओं का मजाक उड़ाने एवं हमें कमजोर करने का एजेंडा है. .....

जब से शुरू हुआ तब से ही निर्माताओं को मुस्लिम समाज ने आकर्षित किया। इसकी शुरुआत बहुत पहले ही हो गयी थी। 40 के दशक में शाहजहाँ इसके बाद अनारकली, 1953 मुमताज महल 1957, मुगल-ए-आजम, 1960 चौदहवी का चाँद और छोटे नवाब। 1961 मेरे महबूब, 1963 बेनजीर, गजल और पालकी और 1967 बहू बेगम आदि फिल्मों के माध्यम से इस्लामिक संस्कृति को जमकर परोसा। इन फिल्मों में खास संगीत और खालिश मुस्लिम समाज की भाषा प्रयोग की। फिल्मांकन और कलाकारों के हाव भाव से ही इनको पहचान लिया जाता है।

अलीगढ़ कट शेरवानी, मुंह में पान चबाते हुए, जुबां पर हर बात में माशा अल्लाह या सुभानअल्लाह करते हुए एक अलग ही अंदाज में चलना तो बताने की जरुरत नहीं थी कि यह मुस्लिम समाज से ताल्लुक रखता है। घर की औरतें या तो पारंपरिक बुर्के में दिखाई देती या बड़ी उमर की औरतें जैसे अम्मीजान नमाज में मशगूल होती हैं। मुस्लिम किरदार भी खूब ईमानदार और खुदा के नेक बंदे, इमान के सच्चे दिखाए जाते चाहें इसमें मुकद्दर का सिकंदर में जोहरा बाई हो या शोले में रहीम चाचा। कुरुक्षेत्र में एक गुंडा मवाली होते हुए भी इकबाल पसीना को ईमानदार और वादे का पक्का मुसलमान दिखाया। जबकि इसके उलट हिन्दू दुकानदार बेहद लालची, मंदिर का पुजारी बेहद भ्रष्ट दिखाया जाते हैं। इन हिन्दू पात्रों को तो इन तरीकों से दिखाया जाता कि यदि कोई गरीब विधवा महिला इनसे मदद मांगने चली जाये तो ये उसकी अस्मत पर हमला करते दिखाए गये।

धीरे-धीरे समय और दशक बदलते गये फिल्म निर्माताओं की पीढ़ियां भी लेकिन किसी न किसी तरीकों से अपने इस्लाम प्रेम को परोसते चले गये। साल 1983 आई कुली फिल्म में नायक अमिताभ बच्चन के पास 786 नम्बर का बिल्ला बेहद शुभ और शक्तिशाली दिखाया गया। दीवार का अमिताभ बच्चन नास्तिक है और वह भगवान् का प्रसाद तक नहीं खाना चाहता है, लेकिन 786 लिखे हुए बिल्ले को हमेशा अपनी जेब में रखता है। फिल्म क्रांति में माता का भजन करने वाला राजा (प्रदीप कुमार) गद्दार है और करीमखान (शत्रुघ्न सिन्हा) एक महान देशभक्त, जो देश के लिए अपनी जान दे देता है। अनेकों फिल्मों में हिन्दू नास्तिक मिलेगा या धर्म का उपहास करता हुआ कोई कारनामा करता दिखेगा और इसके साथ साथ आपको शेरखान पठान, डीएसपी डिसूजा, हवलदार अब्दुल, चर्च का पादरी, आदि जैसे आदर्श चरित्र देखने को मिलेंगे।

फरहान अख्तर की फिल्म "भाग मिल्खा भाग" में "हवन करेंगे" का आखिर क्या मतलब था? क्या ऐसा भद्दा डांस नमाज पढ़ेंगे को लेकर किया जा सकता है? पीके फिल्म में भगवान् का रोंग नंबर बताने वाले आमिर खान क्या कभी अल्ला के रोंग नंबर 786 पर भी कोई फिल्म बनायेंगे? यही नहीं 2003 में चंद्रप्रकाश द्विवेदी की पिंजर इस फिल्म में भी मुस्लिम नायक और हिंदू नायिका की कहानी है। जिसमें हिंदू नायिका, हिन्दू नायक को छोड़कर मुस्लिम नायक के साथ रहने का फैसला करती है। यानि इस फिल्म से बता दिया गया था कि अब हिंदी सिनेमा ने अपने मूल एजेंडे पर काम करना शुरू कर दिया है। पिछले तीन दशक में कोई इक्का दुक्का ऐसी कहानियां आई हैं जिनमें हिंदू लड़का और मुस्लिम लड़की हो परन्तु इसके विपरीत अनगिनत फिल्में ऐसी बनाई जिनमें हिन्दू लड़की को मुस्लिम लड़के के प्रेम में पागल दिखाया। अगर याद करेंगे तो एक दशक पहले शाहरुख खान और काजोल की फिल्म माई नेम इज खान का उदाहरण मिलेगा। आमिर खान की पीके में भी हिंदू लड़की और मुस्लिम लड़के के बीच प्रेम है। पिछले दिनों केदारनाथ आपदा पर बनी फिल्म केदारनाथ में भी एक हिंदू लड़की और मुस्लिम लड़के के बीच प्रेम कहानी को परोसा गया। ऐसी न जाने कितनी कहानियाँ फिल्मों के माध्यम से हिन्दू समाज के सामने परोसी गयी और नाम दिया धर्मनिरपेक्षता का। इस कारण आम हिन्दू कभी समझ ही नहीं पाया कि यह हिंदी सिनेमा के माध्यम से उनके बच्चों के जेहन में इस्लाम घुसाया जा रहा है।

सूफी संगीत के नाम पर अल्लाह, मेरे मौला, या खुदा या अली जैसे शब्द गीतों में बार-बार डाले गये, मंदिरों के पंडितों व पुजारियों को मजाक का पात्र दिखाया गया। यदि सच में ये फिल्मकार सिर्फ मनोरंजन के लिए ऐसा करते हैं तो सिर्फ हिन्दू धर्म और महापुरुषों, उनके धर्म स्थलों और इतिहास का ही अपमान क्यों किया जाता है, इस्लाम से जुड़े किसी चिह्न प्रतीक या शब्द तक का भी इसी तरह मजाक क्यों नहीं बनाया जाता? पिछले एक दशक में न जाने कितने पादरी बलात्कार जैसे अपराधों में पकड़े गये लेकिन एक बलात्कारी पादरी को लेकर जब सिंस फिल्म बनी तो उसे फौरन प्रतिबंधित कर दिया गया। आप गूगल पर बलात्कारी मौलवी सर्च कीजिए दो लाख सत्रह हजार रिजल्ट निकलकर सामने आते हैं किन्तु इनके ऊपर कोई फिल्में नहीं बनाई जाती। जरा सोचकर बताइए कितनी ऐसी भारतीय फिल्म याद हैं जिसमें मजहब इस्लाम का अपमान किया गया हो? जो कुछ गिनी चुनी बनीं भी तो उनको धर्मनिरपेक्षता के नाम पर तुरंत तत्कालीन सरकारों द्वारा बैन कर दिया गया। बस हिन्दू धर्म को कितनी भी गाली दो, उसका कितना भी अपमान करो, उसके इतिहास के साथ कितनी भी छेड़छाड़ करो, धर्म से जुड़े लोगों का कितना भी अपमान करो वे सब इस देश में कभी बैन नहीं होगा। यह एकतरफा हिन्दू विरोध संयोग नहीं बल्कि सोची समझी साजिश है। लव जिहाद, धर्म परिवर्तन करने, अपमान करने, भावनाओं का मजाक उड़ाने एवं हमें कमजोर करने का एजेंडा है इसमें नेटफ्लिक्स की नई वेब सीरीज लैला का आ जाना कोई बड़ी बात नहीं है।

- राजीव चौधरी

प्रेरक प्रसंग

वे कितने बलिदानी थे!

हैदराबाद सत्याग्रह के एक सर्वाधिकारी पण्डित ज्ञानेन्द्रजी सिद्धान्त भूषण साधनहीन बालक थे। बड़ौदा राज्य की ओर से उनकी शिक्षा की नि:शुल्क व्यवस्था की गई। वे एक मेधावी विद्यार्थी निकले। पितृहीन बालक थे। राज्य के शिक्षाविभाग ने उस विद्यार्थी की योग्यता को देखकर मैट्रिक के पश्चात् राज्य के व्यय से उन्हें उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैंड भेजने के लिए चुन लिया। सारा व्यय महाराजा बड़ौदा को देना था, परन्तु बालक ज्ञानेन्द्र तब आर्यसमाजी बन चुके थे।

आपने डॉक्टर या बैरिस्टर बनने की बजाए एक उच्च विद्वान् बनकर देश-धर्म की रक्षा का व्रत ले लिया। उन दिनों बड़े-छोटे सब युवक ऐसा (डॉक्टर या बैरिस्टर बनने का) अवसर पाकर अपने को धन्य मानते थे, परन्तु ज्ञानेन्द्र ने बड़ी दृढ़ता से यह (सुझाव व सुविधा) ठुकरा दी। वे उपदेशक विद्यालय लाहौर में स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज के चरणों में बैठकर एक पूज्य विद्वान् बने और भरी जवानी धर्म और जाति पर वार दी। उन्होंने भोग व ऐश्वर्य पर लात मारकर बहुत बड़ा त्याग किया। कोई संस्कारी जीव ही ऐसा कर सकता है। सोच-समझकर काँटो के पथ पर चल पड़े। 'कलम! आज उनकी जय बोल'

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

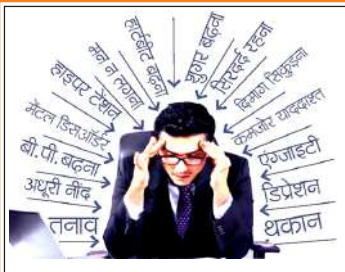

तनाव के कारण और निवारण

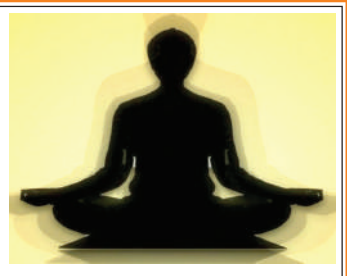

जीवन की यात्रा में परीक्षा सबके लिए अनिवार्य है लेकिन कर्मसिद्धांत के अनुसार यहां पर प्रश्नपत्र सबको एक जैसा कभी नहीं मिलता। शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थी जब परीक्षा देते हैं तो उनका प्रश्नपत्र एक समान हो सकता है किंतु जीवन की परीक्षा में प्रश्नपत्र सबका अलग-अलग ही होता है और हर रोज प्रश्नपत्र बदलता भी रहता है। क्योंकि यह परीक्षा सरल नहीं, एक कठिन परीक्षा है। इसमें कभी मनुष्य के विवेक की परीक्षा, कभी सेहत की परीक्षा, कभी उसकी वाणी की और कभी कर्मों की परीक्षा, कभी धैर्य और सहास की परीक्षा, कभी शारीरिक शक्ति, मानसिक क्षमता और भावनाओं की परीक्षा। इतना ही नहीं कभी-कभी अपनों के बीच परीक्षा से होकर गुजरना पड़ता है और कभी परायों के सामने परीक्षा होती है। इस परीक्षा के कारण ही मनुष्य रोज-रोज तनाव से घिरा रहता है। किंतु दुनिया में ऐसी कोई परीक्षा नहीं जिसके परिणाम में सफलता न मिले। हर परीक्षा के दौर में उत्तीर्ण होने के लिए जरूरत होती है, महापुरुषों की प्रेरणा को अपनाने के लिए उनके जीवन चरित्रों के स्वाध्याय की, उनके अनुभवों और शिक्षाओं के अनुसार जीवन जीने की, वेदादि शास्त्रों के अनुसार सही दिशा में सही चिंतन की, संतुलन की, शांति की, सही व्यवस्था की, परिश्रम और पुरुषार्थ की, ईश्वर के विश्वास की और इन सबके साथ थोड़े से हास-परिहास की। आर्य संदेश के इस अंक में यहां प्रस्तुत है समाज में लगाातार बढ़ रहे तनाव के निवारण हेतु यह आलेख। हमारा प्रयास रहेगा कि इस विषय पर शोध परक सरल विचार कुछ समय तक क्रमशः प्रस्तुत किए जाएं.... *सम्पादक*

....तनाव से बचने के लिए सबसे पहले मन में ज्यादा इच्छाएं न पालें, मान-सम्मान की चाह को त्यागें, प्रतिदिन सुबह-शाम ईश्वर का ध्यान, संध्या-उपासना नियम से करें, संसार के ज्यादा घालमेल में न पड़ें, समयानुसार अपने कर्त्तव्यों को पूरा करें, दीर्घसूत्री न बनें, आज का काम कल पर न टालें, पानी ज्यादा पीयें, प्रकृति के बीच कुछ समय बिताएं, बच्चों के साथ बैठें, हंसने और मुस्कराने की आदत को न छोड़ें, किसी भी प्रकार की कोई परेशानी या समस्या सामने हो तो उस पर सही चिंतन करें। एक कागज पर भी लिख सकते हैं कि समस्या का कारण क्या है? और उसका समाधान कैसे होगा, किन-किन लोगों का सहयोग इसमें सहायक होगा और उसके अनुसार प्रयास करें।.....

तनाव शब्द का अर्थ है-तनने की अवस्था। जैसे धनुष के दोनों सिरों पर बंधी हुई डोर सीधी लकड़ी को खींचकर तान देती है। तनाव शब्द का दूसरा अर्थ खींचतान भी है और तनाव का संबंध मन से होने के कारण इसका प्रमुख हेतु द्वेष भावना या प्रतिकूलता को भी माना गया है। प्रतिस्पर्धा के इस युग में तनाव ग्रस्त होना एक साधारण-सी दिखने वाली असाधारण समस्या है। इसलिए आजकल ऐसा लगता है कि जैसे तनाव के तंतु हवा में तैर रहे हैं, पानी में मिनरल के रूप में मिले हुए हैं, अन्न में तनाव भरा हुआ है। मनुष्य तनाव को खा रहा है, पी रहा है, जी रहा है, या तनाव मनुष्य को निगलने को तत्पर है। क्योंकि स्कूल में जाने वाले छोटे बच्चों से लेकर कॉलेज में जाने वाले अथवा नौकरी कार्य-व्यापार से जुड़े लड़के-लड़कियां और घर में रहने वाली एवं नौकरी पेशा महिलाओं तक, घर के बड़े-बुजुर्गों में सबके भीतर तनाव खूब फल-फूल रहा है। यूं तो बाहर से आदमी हंसता-मुस्कराता नजर आता है लेकिन सबके भीतर तनाव ही तनाव है। स्थिति कुछ ऐसी है जैसे पार्क में हरियाली के बीच फूल खिले हैं, उन पर तितलियां और भंवरे मंडरा रहे हैं। देखकर अच्छा दृश्य लग रहा है। पर जब थोड़ी-सी घास को हटाकर जमीन को खोदा जाता है तो नीचे पानी ही पानी है। ऐसे ही मनुष्य बाहर-बाहर से खुशहाल नजर आ रहा है अथवा खुशहाली का दिखावा कर रहा है, अगर किसी को थोड़ा-सा सहानुभूति के साथ कुरेदने की कोशिश करें, तो व्यक्ति तुरंत द्रवित हो उठता है और तनाव की कथा सुनाना शुरू कर देता है। बहुत बड़े-बड़े दर्द पीड़ा अपने दिल में दबाकर इंसान खुशहाली का मुखौटा लगाए तनावपूर्ण जीवन जी रहा है।

तनाव के कारण

एक व्यक्ति जो कहीं किसी कार्यालय में कार्यरत था। उसका एक तरफ से गाल जला हुआ था। उसके साथी ने पूछा भाई तुम्हारा ये गाल कैसे जल गया? उसने कहा प्रेस से। उस पूछने वाले ने पूछा कि किसी बच्चे ने प्रेस लगा दी होगी? तो उस गाल जले व्यक्ति ने कहा कि नहीं भाई मैंने स्वयं लगाई है। उसने पूछा कैसे? तो उसने बताया कि सुबह मैं कपड़े प्रेस कर रहा था और तभी एक फोन आया, प्रेस भी पास में थी और फोन भी पास में ही था। फोन की बाजए प्रेस उठाकर कान पर लगा ली, कान तो बालों की वजह से बच गया लेकिन मेरा यह गाल जल गया। उसने अपने मित्र के सामने बहुत दु:ख जताया लेकिन दोनों आपस मे यही कह रहे थे कि भाई क्या करें ऑफिस में काम का तनाव ही इतना है, घर की अलग आफत है, बच्चों की रोज, रोज नई समस्याएं, पैसा कितना भी कमाओ कम ही है, बहुत से लोग मजे ले रहे हैं, हम है कि ऐसे ही पिस रहे हैं। बीमारियों का अलग तांडव, ट्रैफिक जाम की समस्या, समय पर ऑफिस पहुंचने की चुनौती, रिश्ते नाते वाले अलग परेशान करते हैं, सामाजिक रीति रिवाजों, मान्यताओं, परंपराओं के अनुसार पर्वो को मनाने का अलग प्रेसर हम तो प्रेसर कूकर बनकर जी रहे हैं, पता नहीं कब-कहां फट जाए। दूसरा मित्र कहने लगा कि भाई आप ठीक कह रहे हो, अब देखिए रक्षाबंधन आने वाला है, फिर जन्माष्टमी, इसके बाद श्राद्ध-नवरात्र-विजयादशमी, दीपावली-भैय्यादूज, इतने सारे त्यौहार, क्या करें, कैसे मनाएं त्यौहार, हर त्यौहार-खर्चो की सौगात लेकर आता है, अब करें तो क्या करें? यहां विचारणीय बिंदु यह है कि जो पर्व-त्यौहार घर-परिवारों में उमंग-तरंग और खुशी देने के लिए आते थे, निराशा- उदासी की मुर्दनी को हटाकर मन में मधुरता और विचारों में ताजगी भरते थे। वे भी मनुष्य के भीतर तनाव रोपण का कार्य कर रहे हैं। किंतु ये सब तनाव की सामान्य बाते हैं।

तनाव के लक्षण

मनुष्य इतना तनाव ग्रस्त होता जा रहा है कि चश्मा सिर पर रखा हुआ है और चश्मा-चश्मा चिल्ला रहा है, इसी तरह किसी भी सामान को रखकर भूल जाना तनाव का सामान्य लक्षण है।, अपने बड़े बेटे को बुलाना चाहता है, नाम छोटे का ले रहा है और देख बीच वाले की तरफ रहा है। घरों में दूध-सब्जी जलने की घटनाएं तो आम बात है लेकिन कई लोग तो उल्टा पायजामा पहनकर भी यात्रा करते देखे जाते हैं, अकेले में बात करना-बड़बडाना, रास्ता भूल जाना, नींद न आना, भूख न लगना, किसी भी कार्य में मन न लगना, अपनी शक्ति-सामर्थ्य पर विश्वास न होना, आदि तनाव के साधारण लक्षण हैं।

तनाव के प्रकार

तनाव शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से मनुष्य को प्रभावित करता है। शारीरिक परिश्रम करते-करते कभी-कभी इतनी थकावट हो जाती है कि ऐसे लगता है कि जैसे बिस्तर पर जाते ही नींद आ जाएगी लेकिन शरीर के तंतु इतने तनावयुक्त हो जाते हैं कि दर्द के मारे नींद नहीं आती और आदमी बीमार पड़ जाता है। इसी तरह मानसिक तनाव और बौद्धिक तनाव की स्थिति भयावह होती है। मान लीजिए कि आपने सारा दिन मैंनटल वर्क किया और आप मानसिक रूप से थक गए हैं तो फिर एक अजीब सी बेचैनी बनी रहती है। उस स्थिति में मनुष्य को ऐसे लगता है कि जैसे सो रहा है लेकिन बेसुध वाली स्थिति होती है। बौद्धिक तनाव के कारण व्यक्ति गलत निर्णय कर बैठता है। कई बार तो गलत निर्णय के कारण जीवन भर पछताना पड़ता है लेकिन इससे भी ज्यादा खतरनाक होता है भावनात्मक तनाव। भावनात्मक तनाव की स्थिति का कारण गैर कम अपने ज्यादा होते हैं। जब कोई अपना दिल को चोट पहुंचाए तभी भावनात्मक तनाव पैदा होता है। जिनके लिए जीवनभर करते-करते इन्सान थक जाए, स्वयं को पूरी तरह से खपा दे और वो सामने आकर कहने लगे कि आपने मेरे लिए किया ही क्या है? इससे भी ज्यादा कड़वे शब्द बोल जाए तो उसका दुष्प्रभाव मन पर इतना गहरा होता है कि मनुष्य का दिल और दिमाग यहां तक की शरीर का रोम-रोम तनाव से कराह उठता है। ऐसी स्थिति में आंख से आसूं बहते हैं और आदमी रोते-रोते भी थक जाता है। भावनात्मक तनाव में इन्सान भगवान से प्रार्थना भी करता है तो इस तरह करता है कि हे ईश्वर, माना कि दुनिया मेरे खिलाफ है लेकिन तू तो मेरा अपना है, तेरी दुनिया से अब मन ऊब गया है, तू मुझे मौत क्यों नहीं देता। क्यों जीवन देकर मुझे दु:खी कर रहा है। यह स्थिति बड़ी भयानक होती है, पीड़ादायक होती है। शरीर का तनाव आप बर्दाश्त कर सकते हैं, मानसिक तनाव भी आप बर्दाश्त कर सकते हैं लेकिन एक सीमा तक भावनात्मक तनाव सहना बड़ा कठिन होता है। यह तो खरोंच-खरोंच कर इन्सान को बिखेर देता है। **- क्रमशः**

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में एकरूपीय यज्ञ प्रशिक्षण शिविर आरम्भ

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 में 10,000 याज्ञिकों द्वारा किया गया एकरूप यज्ञ के विहंगम दृश्य के सम्पूर्ण विश्व के आर्यजन साक्षी रहे। यज्ञ का यह अनुपम दृश्य आर्य समाज के इतिहास में एक महान कीर्तिमान है। इस क्रम में भविष्य में भी ऐसे वृहद यज्ञ के आयोजन हेतु दिल्ली के समस्त आर्य विद्यालयों एवं गुरुकुलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को यज्ञ प्रशिक्षण देने के लिए विशाल प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। इसके लिए आर्य विद्यालय एवं गुरुकुलों के अधिकारीगण योजना बनाए और सामूहिक रूप से विद्यार्थियों को यज्ञ प्रशिक्षण की कक्षाओं का आयोजन करें। इसके लिए सभा की ओर से प्रशिक्षक की भी व्यवस्था की जाएगी। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें- **सतीश चड्डा, महामंत्री,**
आर्य केंद्रीय सभा, दिल्ली राज्य, मो. 9313013123

आपके लिए अनुपयोगी वस्त्र, जूते-चप्पल, स्टेशनरी के सामान, खिलौने आदि को जरुरतमंद लोगों तक पहुंचाने की विशेष योजना

आओ, हम जुड़ें 'सहयोग' से : सच्चे - अच्छे योग से

"सहयोग" सेवा यज्ञ हमारा
जरूरतमंदों को मिला सहारा
आओ, हाथ बढ़ाएं- सहयोगी बन जाएं

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित सहयोग एक ऐसी कल्याणकारी दिव्य योजना है, जिससे लाखों लोग लगातार लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

सहयोग : क्या है योजना?

सहयोग एक चार अक्षरों का छोटा-सा शब्द है, लेकिन इसकी महिमा अपरमपार है। सहयोग के माध्यम से शहरों, नगरों से दूर आदिवासी क्षेत्रों में अभावग्रस्त मनुष्यों की सेवा सहायता का एक महान अभियान गतिशील है। यह सर्वविदित है कि अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा मानव सेवा के कई विशेष कार्य काफी लंबे समय से चल रहे हैं। इन सेवाकार्यों को गति देते हुए संघ के अधिकारियों ने आदिवासी क्षेत्रों में ईश्वर की अमृत संतान मनुष्यों को बड़ी तंगहाली और बदहाली में करीब से व्यथित जीवन जीते देखा तो ज्ञात हुआ कि विश्व की छटी अर्थव्यवस्था के रूप में विख्यात भारत में आज भी लोग अपनी मूलभूत जरूरतों से महरूम हैं। तन ढांपने के लिए वस्त्र और जूते, चप्पल आदि की जरूरतें भी लोगों को रुला रही हैं। यह देखकर आर्य नेताओं को ऋषि दयानंद के महान जीवन से जुड़ी घटना याद आ गई कि किस तरह एक निर्धन मां ने अपने बच्चे के मृत शरीर से कफन को उतार कर उसे नग्न ही जल में प्रवाहित कर दिया था। इस मार्मिक घटना से ऋषि का कोमल हृदय द्रवित हो उठा और उन्होंने अपने शरीर पर वस्त्र धारण करना ही बंद कर दिया। ऋषि दयानंद के अनुयायी आर्यजनों ने महान कर्मयोगी महाशय धर्मपाल जी से आदिवासी बंधुओं की इस पीड़ा के विषय में विचार विमर्श कर आदिवासी क्षेत्रों में या अन्य किसी भी स्थान पर जरूरतमंदों की पहचान कर उन्हें पुराने किंतु उपयोगी वस्त्र जूते, चप्पल, पुस्तकें, खिलौने, स्टेशनरी आदि समानों को उन तक पहुंचाने के लिए **"सहयोग"** नामक योजना का शुभारंभ किया। जो कि आज तीव्र गति से जरूरतमंद छात्रों, युवाओं और वृद्धजनों को लगातार सहयोग प्रदान कर रहा है।

कैसे बनें "सहयोग" के सदस्य?

⋆ सहयोग में सहभागिता के लिए पहला बिंदु है कि आप जिन वस्त्रों का प्रयोग नहीं करते, उन उपयोगी वस्त्रों को स्वच्छ करके, प्रेस कराके, पैकट में रखकर अपनी नजदीकी आर्यसमाज अथवा सहयोग के सेंटर पर पहुंचाएं ।

⋆ इसी तरह से आप जिन जूते, चप्पलों का प्रयोग नहीं करते वे दूसरों के काम आने लायक हों तो उन्हें पोलिश कराके उन्हें भी पैकट में रखें और वस्त्रों की तरह सहयोग के लिए सेंटर पर भेजें।

⋆ इस क्रम में आप खिलौने, पुस्तक, कॉपी, पैन, पेंसिल आदि उपयोगी वस्तुएं भी विधिवत जैसे किसी को गिफ्ट दिया जाता है वैसे ही पैक करके सहयोग के सहयोगी बनें।

इस सारे समान को सहयोग स्वयं अपनी गाड़ी द्वारा प्राप्त कर लेगा और आप सहयोग के अनन्य सहयोगी सदस्य बन जाएंगे।

निवेदन :- आधुनिक परिवेश में आर्यजनों को ऐसी विभिन्न सेवा योजनाओं को क्रियान्वित करना ही होगा, क्योंकि मानवता आर्य समाज को पुकार रही है, अन्य अनेक तथाकथित दिखावटी, बनावटी संस्थाएं सेवा के नाम पर बढ़ चढ़कर ढोंग

कर रही हैं, लोभ-लालच में भोले-भाले निर्धन लोगों कों विधर्मी बनाने पर तुली हुई हैं। अत: हमें अपने कर्तव्यों को समझना होगा और आर्य समाज की और से निरंतर सृजनात्मक कार्यो को गति देनी होगी। इसलिए आप दिल्ली अथवा एन सी आर में जहां भी रहते हैं वहीं अपने आर्य समाज में, आर्य शिक्षण संस्थान में या अपने गली-मोहल्ले में सहयोग का सेंटर बनाएं और इस अनुपम सेवा को वृहद अभियान का रूप देने में सहयोगी बनें दें।

आओ, करें सहयोग, शुभ कर्मो का योग

अधिक जानकारी प्राप्त करने, सहयोग से जुड़ने के लिए अथवा आप द्वारा एकत्र किया गया सहयोग जरुरतमंदों तक पहुंचाने के लिए मो. नं. 9540050322 पर सम्पर्क। - ***व्यवस्थापक***

वैदिक रेफरेंस लाइब्रेरी - एक वृहद योजना

दिल्ली सभा के इस सृजनात्मक अभियान में प्रत्येक आर्य व्यक्ति, परिवार, संस्था और समाज वैदिक साहित्य को एकत्रित करने में पूरी शक्ति से करें सहयोग प्रदान

किसी भी संस्था या संगठन के विचार, मान्यताएं और परंपराओं के प्राण उसके साहित्य-पुस्तकों में समाए होते हैं। वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के उत्थान में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी से लेकर पंडित लेखराम, स्वामी श्रद्धानंद, लाला लाजपतराय, महात्मा हंसराज, पंडित गुरूदत्त विद्यार्थी, स्वामी दर्शनानंद, स्वामी स्वतंत्रानंद, महात्मा नारायण स्वामी, पंडित तुलसीराम, ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, गंगाप्रसाद उपाध्याय, आर्यमुनि इत्यादि हमारे महापुरुषों ने वेदज्ञान की अविरल धारा को जन-जन तक पहुंचाने के लिए कठिन परिश्रम किया और अत्यधिक मात्रा में साहित्य सृजन कर पुस्तकों के रूप में उसे वितरित भी किया। इसी ज्ञान संपदा की बदौलत आज हम देश के कोने-कोने में और विश्व के 32 देशों तक विस्तार कर पाए हैं। इस क्रम को लगातार आगे बढ़ाने की प्रेरणा देते हुए पंडित लेखराम ने कहा था कि विचारशीलता और लेखन का कार्य आर्यसमाज की ओर से निरंतर चलते रहना चाहिए। जिसके परिणामस्वरूप आर्य समाज के सैकड़ों सुप्रसिद्ध संन्यासियों और विद्वानों ने वैदिक साहित्य कोष की निरंतर अभिवृद्धि की। किंतु आज हामरे महापुरुषों के द्वारा निर्मित कई पुस्तकें ऐसी हैं जो बहते समय के प्रवाह के साथ-साथ धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही हैं। बहुत सी पुस्तकों को किन्हीं कारणों से प्रकाशित

नहीं किया जा रहा है और इस तरह बहुत-सी पुस्तकें जो अत्यंत उपयोगी थीं, उनका मिलना लगातार बहुत कठिन होता जा रहा है।

इन समस्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने कई वर्षो पूर्व "वैदिक रेफरेंस लाइब्रेरी" की योजना का शुभारंभ किया था और सभी आर्य समाजों एवं आर्य जनों से अनुरोध किया था कि आपके घर की अथवा आर्यसमाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं की लाइब्रेरी में कहीं पर भी दुर्लभ वैदिक साहित्य उपलब्ध हो तो कृपया उसे दिल्ली सभा द्वारा संचालित वैदिक रेफरेंस लाइब्रेरी में पहुंचाने की कृपा करें। बहुत से आर्यजनों ने बहुत-सी उपयोगी पुस्तकें पहुंचाई भी हैं, उन सभी महानुभावों का धन्यवाद। लेकिन सभा का यह कार्य अभी अधूरा है, सभा की यह वैदिक रैफरेंस लाइब्रेरी की योजना बड़ी व्यापक है, इसके पीछे भावना यही है कि-

1) आर्य समाज का संपूर्ण वैदिक साहित्य एक स्थान पर पुस्तकों के रूप में हार्ड कापी और साफ्ट कापी दोनों फार्मेट में उपलब्ध हो और यह सारी वैदिक ज्ञान संपदा आर्य समाज की वैबसाइट पर भी उपलब्ध हो।

2) जिसके परिणाम स्वरूप संपूर्ण विश्व में कहीं भी, कभी भी और कोई भी आर्य सज्जन जिस किसी भी पुस्तक का स्वाध्याय करना चाहे अथवा किसी पुस्तक के रेफरेंस से कोई बात प्रमाणित करना चाहे तो वह तुरंत आर्य समाज की वैबसाइट पर जाकर ई.संस्करण द्वारा कर सके।

3) इस तरह आर्य समाज का प्रचार प्रसार भी तीव्रगति से संभव होगा, हमारे पूर्वजों ने जिस लोकोपकारी भावना से कठिन तप करके पुस्तकों की रचना की थी उसकी रक्षा होगी और हमारी अमूल्य निधि वैदिक ज्ञानधारा भी सुरक्षित होगी।

4) इसके साथ साथ आधुनिक तकनीक का उपयोग करके हम देश की युवा पीढ़ि को आर्य विचारधारा और वैदिक ज्ञानधारा से सरलता से जोड़ने मे सफल होंगे।

5) बंधुओ, आज समाज तीव्र गति से बदलाव की ओर बढ़ रहा है, इस परिवर्तन की धारा में हमें अपने वैदिक विचार-मान्यताएं और परंपराओं को सहेजना भी है और उन्हें प्रसारित भी करना है। इसी भावना और कामना को साकार करने में वैदिक रेफरेंस लाइब्रेरी बहुत बड़ी भूमिका निभाएगी।

अत: इस विशेष अनुरोध पर गहराई से चिंतन करें, इसके महत्व को समझें और वैदिक साहित्य को वैदिक रैफरेंस लाइब्रेरी में अपना नाम, पता एवं सम्पर्क सूत्र लिखकर रजिस्टर्ड डाक/कोरियर द्वारा **"प्रबन्धक, वैदिक रैफरेंस लाईब्रेरी"** के नाम - **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर भेजें।

- ***विनय आर्य, महामंत्री***

Swami Dayanand, Aryasamaj and his contribution in Dalit upliftment

Continue from last issue

- Dr. Vivek Arya

Swami Ji life history gives us many examples that although he was himself born in a Brahmin family he rejected casteism. In 1867 we find swami ji eating half bread from hands of a manjhi (boatman). In 1869 in farrukhabad we find him eating from hands of Shri Sukhwasilal sadh. In 1872 in Anoop sahar we find him eating from hands of a barber in general public. In pune when shri Govind Mang, Gopal Chamar, Raghu Mahar requested him for a lecture in Sudra school on Vedas he willingly accepted their proposal and went for lecture on Vedas on 16th July 1875. In 1879 in a during a public lecture a Muslim postman criticized majhabi Sikh presence among general public calling him as shudras are not allowed among high castes. Swami Ji called that person and asked him to daily attend his lectures. In 1878 in Ajmer when swami ji got news that the huts of poor Chamars near Anasagar lake had burned he urgently appealed to public to collect funds for the poor one so that they could rehabilitate, his appeal was widely accepted by all Hindus.

In 1880 in Banaras one Brahmin debated with swami ji giving a shalok from Mahabharata 4/1/48 that Brahmin caste is based on knowledge, practice and birth. Even if a person is having no knowledge and no practice he can be Brahmin on basis of his birth. Swami ji replied a shalok from Manu Smriti 2/157 that as a toy made of wood in form of elephant , as toy made of leather in form of deer are name sake toys only similarly an uneducated person is a Brahmin by name sake only.

In Banaras again when a person debated with him on casteism on basis of birth he said if two sons of a Brahmin are not considered as Brahmin if they are converted to Islam or Christianity then how you could say that son of a Brahmin is a Brahmin.

In a letter dated 13th November 1903 Pandita Ramabai accepted that I was disciple of swami ji in 1880 in Meerut and I was deeply impressed from his teaching as his teachings allows reading of Vedas by womanhood.

In brief Swami Dayanand had propagated the following measures for Dalit upliftment

Swami Ji was first in modern times to raise voice for right of women and shudras to chant Gayatri mantra. The ignorant Brahmins had banned women and shudras to listen Vedic mantras from centuries.

Swami Ji was first in modern times who advocated right of wearing yagnopavit for women and shudras.

Swami Ji was first in modern times who advocated right to perform yajnas by shudras and women hood.

Swami Ji was first in modern times who advocated inter-dinning of all high castes with shudras.

Swami Ji was first in modern times who advocated 100% education for all irrespective of caste or gender or status in society. He even advised that those parents who did not admit their kids to schools for education must be punished by the king. He even advised that son of a king and son of a poor should be given same cloths and same facilities in his teaching Gurukul.

Swami Ji was first to advocate that marriage of a girl and boy must be done on basis of their qualities not on basis of their caste.

Swami ji was first to reject interpolations in Manu smriti. He said I do not believe in interpolations in Manu smriti which supports casteism and inferior status for womanhood and are thus not in accordance with the Vedas. This stand of swami Dayanand on Manu smriti is also applies on other texts like Ramayana, Mahabharata and Puranas.

Due to his demise swami Dayanand was not able to do much work at ground level for Dalit upliftment but his writings, his speech, his organization Arya samaj caused great consciousness among general public and the organization Aryasamaj and its leaders carried his agenda of Dalit upliftment to ground level.

DALIT UPLIFTMENT WORK BY ARYASAMAJ

After swami Dayanand leaders of Aryasamaj paid special attention or upliftment of depressed classes.

The first notable worker in this field was pundit Ganga Ram of Muzaffargarh. He started work in odes, a low caste. He offered sacred threads to them and opened a school name Arya Dalitoddhar Pathshala.

Lala Munshi Ram later Swami Sharddhananda was forerunner among Vedic missionaries. He first started eradication of untouchability from his own home. In 1910 He married his own daughter Amrit Kala out of caste despite objections from his own family.

Swami Sharddhananda opened Gurukul Kangri near Hardwar in view of fulfilling the dreams of Swami Dayanand that son of a king or a poor farmer should get education from one common platform with equal facilities for both and without any discrimination of caste. He got his both sons admitted in the same Gurukul. Later thousands of Gurukul were established all over country following his example which imparted education of Vedas and other streams for all irrespective of castes.

In 1920 Swami Sharddhananda most important work among untouchables was to secure for them permission to draw water from wells. Swami Ji went with his several followers and untouchables in a procession outside Ajmeri Gate at the Angoori wala well. His procession was first attacked by both castist Hindus and Muslims but with his continuous effort many wells and temples were opened for untouchables.

In 1921 Swami Sharddhananda established Dalitoddhar Sabha at Delhi. Its aim was to preach true conduct among the untouchables, to safe guard them from onslaughts especially from Christians and Muslims, to make them offer the right hitherto lost by them, to open Pathshala for them and to educate them. The biggest problem was of unemployment which was mostly in Zamindari areas. Zamindars treated the depressed classes very badly. This Sabha severely denounced this atrocity and succeeded a great deal in diminishing the misery of the depressed classes.

- To be continue .....

दयानन्द के बेटे

- रोहित आर्य

वेद ज्ञान लेकर के दिल में, हम तूफान समेटे हैं,
हमें गर्व कहने में है हम, दयानन्द के बेटे हैं।

हमने किया है काम राष्ट्र जागरण का ही,
सारे जनमानस को हमने जगाया है।
ढोंग व पाखण्ड वाली, बेल है उखाड़ डाली,
मुल्ले-मौलवियों का घमण्ड भी मिटाया है।
करके प्रहार सारी ही बुराइयों पै सुनो,
देश के सुधार का भी बिगुल बजाया है।
जिसे अपनाकर के ईश्वर को पा सकोगे,
दुनियाँ को वेद पथ हमने दिखाया है।।

हमने उन्हें बचाया है जो, मझधारों में लेटे हैं।
हमें गर्व कहने में है हम, दयानन्द के बेटे हैं।

जाति-पाँति का मिटाया हमने सदा ही भेद,
बिछुड़ों को हमने ही सीने से लगाया है।
हो गये विधर्मी हमारे जो थे हिन्दू भाई,
वापस ले आये उन्हें आर्य बनाया है।
बाल ब्याह, सती प्रथा बन्द करवाये और,
अधिकार नारियों को शिक्षा का दिलाया है।
ढोंग व आडम्बरों के जाल से निकाल कर,
यज्ञ करना-कराना हमने सिखाया है।।

संस्कृति रक्षा ख़ातिर, हम विष भी पी लेते हैं।
हमें गर्व कहने में है हम, दयानन्द के बेटे हैं।

राष्ट्र अस्मिता के लिए हम लड़ते रहे हैं,
पाने को स्वतन्त्रता को दिया निज खून है।
पढ़कर के सत्यार्थ पाया हमने प्रकाश,
फाँसी चढ़ने का आया जिससे जुनून है।
स्वामी दयानन्द जी से पाकर के प्रेरणा को,
सरदी न देखी, नहीं देखा मई-जून है।
बनकर बिस्मिल, शेखर, भगत सिंह,
नीच अंगरेज दिये गोलियों से भूने हैं।।

भारतमाता की खातिर हम, फाँसी चढ़ लेते हैं।
हमें गर्व कहने में है हम, दयानन्द के बेटे हैं।

माता भारती का मान वापस दिलाने हेतु,
आर्य समाजियों ने योगदान दिया था।
गऊ वध का विरोध हमने किया था और,
आगे बढ़ हमने ही बलिदान किया था।
हिन्दी आन्दोलन में भी हम सदा लड़े थे,
तन-मन-धन का हमीं ने दान किया था।
हैदराबाद की रियासत मिलाने को भी,
आर्यों ने जाकर के सीना तान दिया था।।

लहू बहाकर देश ख़ातिर, त्याग स्वयं का देते हैं।
हमें गर्व कहने में है हम, दयानन्द के बेटे हैं।

गुरुकुल वाली शिक्षा फिर से चलाई और,
वेदों का किया प्रचार सारे ही जहान में।
संस्कृत भाषा फिर पढ़ व पढ़ाकर के,
दिया है बढ़ावा संस्कृत के सम्मान में।
शास्त्र और उपनिषदों को पढ़ने लगे हैं,
हमने लगाया चित्त ईश्वर के ध्यान में।
प्यारे देश भारत को एक करने के लिए,
हिन्दी का प्रसार किया सारे हिन्दुस्तान में।।

ऋषि-मुनियों की परिपाटी, हम दिल में समेटे हैं।
हमें गर्व कहने में है हम, दयानन्द के बेटे हैं।

आर्यों! समूचा देश तुमको पुकारता है,
इस राष्ट्र को हमेशा तुम ही बचाओगे।
ऋषि दयानन्द के दिखाये रास्ते पर चल,
ढोंग व आडम्बरों से तुम ही बचाओगे।
पोप और मुल्लाओं के जाल से निकालकर,
मुक्ति पथ दुनियाँ को तुम ही दिखाओगे।
'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' जब गूँजेगा तो,
सच्चे पूत ऋषि दयानन्द के कहाओगे।।

'रोहित' तुम वो नाविक, जो देश की नैय्या खेते हैं।
हमें गर्व कहने में है हम, दयानन्द के बेटे हैं।

शोक समाचार

श्रीमती सुदेश आर्या जी को पितृशोक

दिल्ली आर्यसमाज की सुप्रसिद्ध भजनोपदेशिका श्रीमती सुदेश आर्या जी के पूज्य पिता श्री दिलीप सिंह जी का 14 जुलाई, 2019 को 88 वर्ष की आयु में देहरादून में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

उनकी स्मृति में शन्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 26 जुलाई, 2019 को उनके पैतृक स्थान विकास नगर, देहरादून में सम्पन्न हुई, जिसमें उनके निजी परिवार एवं निकटवर्ती आर्यसमाजों के अधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

विद्याभास्कर प्रा. नरदेव जी गुडे का निधन

आर्यसमाज लातूर के सम्मानीय सदस्य, परामर्शदाता, आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र के उपमन्त्री एवं लातूर जिला हिन्दी साहित्य परिषद् के संस्थापक सदस्य एवं कोषाध्यक्ष श्री प्रो. नरदेव जी गुडे का 25 जुलाई, 2019 को 74 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से 26 जुलाई, 2019 को किया गया जिसमें आर्य महाराष्ट्र सभा एवं लातूर जिले की कई आर्य संस्थाओं ने पहुंचकर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

23वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में 23वां परिचय सम्मेलन का आयोजन 1 सितम्बर, 2019 को आर्यसमाज आदर्श नगर, नई दिल्ली में प्रातः 10 बजे से किया जाएगा।

सम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुन देव चड्डा जी के अनुसार सभी आय वर्ग एवं शैक्षिक योग्यता स्तर के युवक-युवतियों का यह परिचय सम्मेलन भव्य रूप से आयोजित किया जा रहा है। महर्षि देव दयानंद की शिक्षाओं को सर्वोपरि मानते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा समय-समय पर ऐसे परिचय सम्मेलनों का आयोजन लंबे समय से करती आ रही है। महर्षि दयानंद जी के अनुसार अपने गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार आर्य युवक-युवतियां विवाह करें। इस परंपरा, सिद्धांत और मान्यता को आगे बढ़ाते हुए आर्य परिवारों की युवा पीढ़ी की सेवा में यह अदभुत प्रेरणाप्रद कार्य है। इससे पूर्व 22 आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलनों का आयोजन किया जा चुका है। जिनमें दिल्ली, इंद्रौर, आणंद, रोजड़, गुजरात, जम्मु-कशमीर आदि स्थानों में आयोजित सम्मेलनों में आर्य परिवारों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलन को सफल बनाया। समस्त आर्य परिवारों से अनुरोध है कि अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से सम्बन्ध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्रातिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें। पंजीकरण फॉर्म नीचे दिया गया है तथा **www. thearyasamaj.org** से डाउनलोड किया जा सकता है। आप अपना/अपने बच्चों का पंजीकरण **www.matrimony.thearyasamaj.org** पर ऑनलाईन भी कर सकते हैं।

– **अर्जुनदेव चड्डा, राष्ट्रीय संयोजक** (मो. 9414187428)

पंजीकरण संख्या : ।। ओ३म्।। रसीद संख्या :

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

23 वाँ आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सम्मेलन कार्यालय : 15, हनुमान रोड़, नई दिल्ली - 110001 टेलिफैक्स : - 011-23360150, 23365959

Email: aryasabha@yahoo.com website : www.thearyasamaj.org

पंजीकरण प्रपत्र

: व्यक्तिगत विवरण :

"आवेदक अपना फोटो अनिवार्य रूप से लगाएं।"

1. युवक/युवती का नाम :.. गोत्र..........................
2. जन्मतिथिः.............................. स्थान : ....
3. रंग.............................. वजन .... लम्बाई ....
4. योग्यता (शैक्षणिक एवं अन्य) : ....
5. युवक/युवती सेवारत, व्यवसाय में है तो उसका विवरण/पता/...व्यक्तिगत मासिक आय.......................

: पारिवारिक :

6. पिता/संरक्षक का नाम .... व्यवसायः .... मासिक आय.........................
7. पूरा पताः..
दूरभाष :.............................. मोबा.:.............................. ईमेल :..............................
8. मकान निजी/किराये का है...
9. माता का नाम :.. शिक्षा :.............................. व्यवसाय :..............................
10. भाई – अविवाहित.............................विवाहित.............................. । बहिन– अविवाहित.............................विवाहित.............................. ।
11. उम्मीदवार/अभिभावक किस आर्यसमाज के सदस्य हैं ? (आवश्यक)..
12. युवक/युवती कैसी चाहिए (संक्षिप्त टिप्पणी दें) ....
13. युवक/युवती यदि इनमें से हो तो सही पर (✓) लगाएं : ☐ विधुर : ☐ विधवा : ☐ तलाकशुदा : ☐ विकलांग :
14. **विशेषः**

मैं...घोषणा करता हूँ कि इस फार्म में मेरे द्वारा दी गई समस्त जानकारी एवं तथ्य पूर्णतया सत्य है।

दिनांक : ....

हस्ताक्षर अभिभावक/ प्रत्याशी

कार्यक्रम स्थल :- आर्य समाज, गली नं. 11, सुशीला रोड़ आदर्श नगर, दिल्ली-110033

दिनांक : 1 सितम्बर 2019, रविवार **समय :- प्रातः 10.00 बजे से**

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :

श्री अर्जुनदेव चड्डा, राष्ट्रीय संयोजक मो. 09414187428

आर्य समाज, गली नं. 11, सुशीला रोड़, आदर्श नगर, दिल्ली-110033

श्री रविन्द्र बत्रा, प्रधान, मो. 07011496219, श्री प्रविण बत्रा, मंत्री, मो. 09868993911, श्री देवेन्द्र जावा, कोषाध्यक्ष, मो. 09212114202

नोट : 1. ई-मेल एडरेस, मोबाईल व फोन नम्बर लिखना आवश्यक है
2. विकलांग युवक-युवतियों तथा विधवा एवं तलाकशुदा युवतियों के लिये रजिस्ट्रेशन शुल्क 50% छूट होगी।
3. विवाह सम्बन्ध बनाने से पूर्व दोनों पक्ष अपनी पूर्णसन्तुष्टि कर लें। सभा इसके लिए उत्तरदायी नहीं होगी।
4. आप इस फार्म को www.thearyasamaj.org से डाउनलोड कर भेज सकते हैं। फोटो कॉपी प्रति भी मान्य है। **यह फार्म ऑनलाइन भी भर सकते है लिंक - matrimony.thearyasamaj.org**
5. पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधी सभा नई दिल्ली के नाम रु. 300/-(तीन सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट संलग्न कर अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम एक्सिज बैंक खाता सं. 910010001816166 करोल बाग शाखा IFSC-UTIB 0000223 में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेजें। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15- हनुमान रोड़, नई दिल्ली-1 के पते पर कार्यालय में सम्मेलन की तारीख से 10 दिन पूर्व भेज दे, ताकि प्रत्याशी का विवरण पुस्तिका मे प्रकाशित किया जा सके।
6. **माता-पिता/अभिभावक रजिस्ट्रेशन शुदा पुत्र/पुत्री को सम्मेलन में अवश्य लावें। कॉलम नं. 11 भरना आवश्यक है।**
7. **रजिस्ट्रेशन शुल्क 300/- प्राप्त किये जाने पर ही रजिस्ट्रेशन फार्म स्वीकार किया जायेगा।**

युवक और युवतियाँ परस्पर एक-दूसरे के गुण-कर्म और स्वभाव मिलने पर ही विवाह करें- महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट 427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6

Ph. :011-43781191, 09650622778 E-mail : aspt.india@gmail.com

ब्रेल लिपि में

महर्षि दयानन्द जीवनी

मात्र 1000/-रु

ब्रेल लिपि में

सत्यार्थ प्रकाश

मात्र 2000/-रु

अपने क्षेत्र के नेत्रहीनों/अंध विद्यालयों को अपने आर्यसमाज की ओर से भेंट करें।

-: प्राप्ति स्थान :-

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)

राष्ट्रभृत यज्ञ संपन्न

1 जुलाई 2019 को ऋषि उद्यान अजमेर द्वारा राष्ट्रभृत यज्ञ का आयोजन प्रातः 7:30 से 11:30 तक किया गया। यज्ञ के ब्रह्म श्री विद्यादेव जी के सानिध्य में चारों वेदों के मंत्रों से आहुति दी गई। इस अवसर पर लोकसभा चुनाव से पूर्व राष्ट्र के नेतृत्व की सही हाथों में बागडोर आए इसके लिए जो संकल्प किया गया था उसकी पूर्णता पर ईश्वर का धन्यवाद करते हुए यह विशेष आयोजन सुन्दर तरीके से सम्पन्न हुआ। – ***बलेश्वर मुनि***

योग-ध्यान, साधना शिविर

जम्मू काश्मीर की सुरम्य एवं मनोरम पहाड़ियों में स्थित आनन्दधाम आश्रम (गढ़ी आश्रम) ऊधमपुर, जम्मू काश्मीर में आश्रम के मुख्य संरक्षक महात्मा चैतन्य स्वामी जी की अध्यक्षता एवं पूज्य मां सत्यप्रिया यति जी के सानिध्य में दिनांक 15 से 22 सितम्बर, 2019 तक निःशुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया जाएगा जिसमें अनुभवी आचार्यो एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि का क्रियात्मक अभ्यास कराया जाऐगा। शिविर में भाग लेने के इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित करने के लिए फोन नं0 09419107788 व 09419198451 पर तुरन्त सम्पर्क करें। – *भारत भूषण आनन्द, प्रधान*

आर्य सनातन रक्षा सम्मेलन

27 सितम्बर, शुक्रवार 2019

प्रातः 10 से 02:30 बजे

तालकटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली

आप सब सपरिवार सादर आमंत्रित हैं।

-: निवेदक :-

ठा. विक्रम सिंह रा. अध्यक्ष **डा. आनन्द कुमार** रा. महासचिव

राष्ट्र निर्माण पार्टी

छात्रवृत्ति हेतु आवेदन आमन्त्रित

सरकारी/ गैर सरकारी/ निजी विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, गुरुकुलों, पाठशालाओं, आश्रमों में आर्ष पाठ विधि से विद्या अध्ययन करने वाले अथवा ऐसे छात्र-छात्राओं जो अन्य विषयों के साथ संस्कृत साहित्य का भी अनिवार्य विषय के रूप में अध्ययन कर रहे हैं अथवा ऐसे विद्यानुरागी जो आर्थिक रूप से कमजोर हैं अथवा जिनके माता-पिता सहयोग करने में असमर्थ हैं, को आर्यसमाज की ओर से छात्रवृत्ति की सुविधा प्रदान की जा रही है। सुविधा का लाभ उठाने के लिए उपरोक्त के अन्तर्गत आने वाले छात्र-छात्राएं अपना नाम, पिता/माता/संरक्षक का नाम, पता, विद्यालय/संस्थान का नाम लिखते हुए आवेदन करें। आवेदन पत्र पर विद्यार्थी के प्रधानाचार्य/आचार्य के हस्ताक्षर सम्पर्क सूत्र के साथ अवश्य हों। इच्छुक विद्यार्थी/संस्थान अपने आवेदन पत्र **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर प्रेषित करें। – ***महामन्त्री***

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 29 जुलाई, 2019 से रविवार 4 अगस्त, 2019

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 01/-02 अगस्त, 2019

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 31 जुलाई, 2019

प्रथम पृष्ठ का शेष

महात्मा गांधी, सरदार वल्लभ भाई पटेल, महर्षि दयानंद सरस्वती और वर्तमान में भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने जन्म लिया है। गुजरात राज्य में सेवा करने का अवसर मिला ये मेरे लिए सौभाग्य की बात है और आज आप सबके बीच आकर जो मुझे स्नेह और प्यार मिला इसके लिए भी मैं आपका आभारी हूं। ऋषि दयानंद ने मानवता की भलाई के लिए अपना संपूर्ण जीवन न्यौछावर कर दिया। अनेक बार जहर पिया, लोगों ने पत्थर मारे, खूब चोट पहुंचाई। दुनिया एक तरफ थी और ऋषि दयानंद अकेला एक तरफ था। फिर भी उस महामानव ने हार नहीं मानी और सत्य धर्म का प्रचार करते चले गए। आज हम सब आर्यों को ऋषि की जन्मभूमि पर संकल्प लेना चाहिए कि आर्यसमाज के विचारों का प्रचार करते रहेंगे। वेद धर्म का प्रचार करते रहेंगे, सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ आर्य समाज का आंदोलन चलता रहेगा और एक महान राष्ट्र के रूप में हम भारत देश को स्थापित करेंगे।

आर्य समाज के विस्तार का संकल्प लें - आर्यजन

ऋषि दयानंद के जीवन से जुड़ी घटनाओं का जिक्र करते हुए आचार्य जी ने आर्यजनों को संदेश दिया कि ऋषि दयानंद का जन्म गुजरात में जरूर हुआ लेकिन उनका ज्यादा समय उत्तर भारत में ही व्यतीत हुआ। गुजरात को छोड़कर जाने के बाद ऋषि दयानन्द फिर में लौटकर नहीं आए। क्योंकि उन्हें यह पता था कि गुजरात में पुन: जाने के कारण कहीं उनके घर वाले उन्हें घर गृहस्थी में न बांध दें। इसलिए ऋषि दयानंद मानवता की भलाई के लिए और वेदों के प्रचार हेतु उत्तर भारत में ही ज्यादा समय तक प्रचार करते रहे। लेकिन आज यहां जितने भी भाई-बहन, युवा बच्चे उपस्थित हैं उन सबसे मेरा आग्रह है कि जिस महामानव ने पूरी दुनिया को जगाया, समाज को नई चेतना और नई सोच दी, वेद का रास्ता बताया, उनकी प्रेरणा से आज गुजरात के सभी भाई-बहनों को संकल्प लेना चाहिए कि जितना प्रचार-प्रसार ऋषि ने उत्तर भारत में किया है, उतना ही आर्यसमाज का विस्तार हम गुजरात और पूरे भारत में करेंगे।

दुनिया में सबसे सुंदर और भव्य बने ऋषि स्मारक

आचार्य जी ने वहां उपस्थित श्री अजय सहगल जी, श्री सुरेश अग्रवाल जी, आचार्य रामदेव जी, श्री हंसमुख परमार जी, श्री मोहन भाई कुंडारिया जी, टंकारा स्मारक ट्रस्ट के ट्रस्टीगण और आर्यसमाज के अधिकारियों तथा गुरुकुल के ब्रह्मचारियों और समस्त आर्यजनों के प्रति धन्यवाद व्यक्त करते हुए कहा कि आज इतना सम्मान, अपनापन और स्नेह मुझे मिला है इसके लिए मैं सबका धन्यवाद करता हूं। आज मैं एक निवेदन करना चाहता हूं कि हम सब आर्यों का यह तीर्थस्थल दुनिया में सबसे सुंदर और भव्य बनना चाहिए। इसके लिए अजय सहगल जी एक ऐसा प्रारूप तैयार करें जिसमें यह ऋषि स्मारक दुनिया में अनुपम संस्थान के रूप में विख्यात हो। एक ऐसा प्रेरणा स्थल जहां से सब लोग प्रेरणा प्राप्त करें। इसके लिए मैं प्रदेश सरकार से भी आग्रह करूंगा क्योंकि ये सबकी चेतना और प्रेरणा का केंद्र है। ऋषि स्मारक के उत्थान के लिए आचार्य जी ने 11 लाख रुपए का सहयोग देने की घोषणा की, जिसका सभी ने करतल ध्वनि से स्वागत किया। - *मन्त्री*

प्रतिष्ठा में,

एक करोड़ छियत्तर लाख+
लोगों ने अब तक देखा
आर्यसमाज YouTube चैनल

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें। यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना चाहते हैं तो घंटी का बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।

आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह